निर्वाण क्षेत्र पूजन

रचयिता - कविवर ज्ञानतरायजी कृत

प्रस्तुति - तत्वचर्चा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

(सोरठा)

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निश-दीस, मन वच तन पूजा करूं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्राणि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्! (आह्वाननम्)
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्राणि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! (स्थापनम्)
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्राणि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
(सन्निधिकरणम्)।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

शुचि क्षीर-दध-सम नीर निरमल, कनक-झारी में भरूं ।
संसार पार उतार स्वामी, जोर-कर विनती करूं ।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को ।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्य जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play
/Tatvacharcha

(गीता)

केसर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरूं।
भव-ताप को संताप मेटो, जोर-कर विनती करूं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

मोती-समान अखंड तंदुल, अमल आनंद धरि तरूं।
औगुन-हरो गुन करो हमको, जोर-कर विनती करूं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

शुभफूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मन को हरूं।
दु:ख-धाम-काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करूं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरूं।
मम भूख-दूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करूं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

(गीता)

दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिर सेती नहिं डरूं।
संशय-विमोह-विभरम-तम हर, जोर कर विनती करूं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।६

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

शुभ-धूप परम-अनूप पावन, भाव-पावन आचरूं।
सब करम-पुंज जलाय दीज्यो, जोर-कर विनती करूं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चार-गति सों निरवरूं।
निहचै मुकति-फल देहु मोको, जोर कर विनती करूं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरूं।
'द्यानत' करो निर्भय जगत् सों, जोड़ कर विनती करूं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजूं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलासादिक नमूं।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाण तें।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(चौपाई)

नमूं ऋषभ कैलास-पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चंपापुर वंदूँ, सन्मति पावापुर अभिनंदूं।।

वंदूं अजित अजित पद-दाता, वंदूं संभव भव-दुःख-घाता।
वंदूं अभिनंदन गुणनायक, वंदूं सुमति सुमति के दायक।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(चौपाई)

वंदूं पदम मुकति-पदमाकर, वंदूं सुपास आश-पासाहर।
वंदूं चंद्रप्रभ प्रभु चंदा, वंदूं सुविधि सुविधि-निधि-कंदा।।

वंदूं शीतल अघ-तप-शीतल, वंदूं श्रेयांस श्रेयांस-महीतल।
वंदूं विमल विमल-उपयोगी, वंदूं अनंत अनंत-सुखभोगी।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(चौपाई)

वंदूं धर्म धर्म-विस्तारा, वंदूं शांति शांति-मन-धारा।
वंदूं कुंथु कुंथ-रखवालं, वंदूं अर अरि-हर गुणमालं।।

वंदूं मल्लि काम-मल-चूरन, वंदूं मुनिसुव्रत व्रत-पूरन।
वंदूं नमि जिन नमित-सुरासुर, वंदूं पार्श्व पार्श्व-भ्रम-जग-हर।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(चौपाई)

बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद-महागिरि भू पर।
भावसहित वंदे जो कोई, ताहि नरक-पशु-गति-नहिं होई।।

नरपति नृप-सुर-शक्र कहावें, तिहुँजग-भोग भोगि शिव पावें।
विघन-विनाशन मंगलकारी, गुण-विलास वंदूं भवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति -तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्य: जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(दोहा)

जो तीरथ जावे पाप मिटावे,
ध्यावे गावे भगति करे।
ताको जस कहिये संपति लहिये,
गिरि के गुण को बुध उचरे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha